13/07/21 Ch-1

पद रैदास (1)

(a) अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।
प्रभू जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी,
जाकी अँग-अँग बास समानी।
प्रभू जी, तुम घन बन हम मोर, जैसे
चितवत चंद चकोरा।
प्रभू जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी
जोति बरै दिन राती।
प्रभू जी, तुम मोती हम धागा, जैसे
सोनहिं मिलत सुहागा।
प्रभू जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति
करै रैदासा।

शब्दार्थ

बास - गंध / वास

समानी - समाना (सुगंध का बस जाना),
बसा हुआ (समाहित)।

घन → बादल

मोरा → मोर, मयूर

चितवत - दिखाना निरखाना

चकोर- तीतर की जाति का एक पक्षी जो चंद्रमा का परम प्रेमी माना जाता है।

बती - बत्ती, रूई, जिसे तेल मे डालकर दियाजलाते है।

जोति - ज्योति, देवता के प्रीत्यर्थ जलाये जाने वाला दीपक

बरै - बढ़ाना, जलना

राती - रात्रि

सुहागा - सोने को शुद्ध करने के लिए प्रयोग में आने वाला क्षारद्रव्य

दासा - दास, सेवक

व्याख्या- इस पद मे कवि ने भक्त की उस अवस्था का वर्णन किया है जब भक्त पर अपने आराध्य की भक्ति का रंग पूरी तरह से चढ़ जाता है कवि के कहने का अभिप्राय है कि एक बार जब भगवान की भक्ति का रंग भक्ति पर

चढ़ जाता है तो भक्त को भगवान की भक्ति से दूर करना असंभव हो जाता है। कवि भगवान से कहता है कि हे प्रभु! यदि तुम चंदन हो तो तुम्हारा भक्त पानी है। कवि कहता है कि जिस प्रकार चंदन की सुगंध पानी के बूंद-बूंद में समा जाती है उसी प्रकार प्रभु की भक्ति भक्त के अंग-अंग में समा जाती है। कवि भगवान से कहता है कि हे प्रभू! यदि तुम बादल हो तो तुम्हारा भक्त किसी मोर के समान है जो बादल को देखते ही नाचने लगता है। कवि भगवान से कहता है कि हे प्रभू यदि तुम चाँद हो तो तुम्हारा भक्त उस चकोर पक्षी की तरह है जो बिना अपनी पलकों को झपकाए चाँद को देखता रहता है। कवि भगवान से कहता है कि हे प्रभू यदि तुम दीपक हो तो तुम्हारा भक्त उसकी बाती की तरह है जो उस धागे के समान है जिसमें मोतियाँ पिरोई जाती हैं। उसका असर ऐसा होता है जैसे सोने में सुहागा डाला गया हो अर्थात उसकी सुंदरता और भी निखर जाती है। कवि बेदास अपने आराध्य के प्रति अपनी भक्ति को दर्शाते हुए कहते हैं कि हे मेरे प्रभू! यदि तुम स्वामी हो तो मैं आपका भक्त आपका दास यानि नौकर हूँ।

13/04/20

HW

संबंधित प्रश्न -

(1.) कवि अपने इष्टदेव का स्मरण करते हुए क्या मांगते है ?

⇒ कवि अपने इष्टदेव का ~~स्म~~ स्मरण करते हुए मांगते है कि हर हम वो उनके दास बने रहे ।

(2.) कवि ने भगवान और भक्त का संबंध किस प्रकार बताया है ?

⇒ कवि ने भगवान और भक्त का संबंध दास के प्रकार बताया है ।

(3.) कवि को ~~रा~~ रामनाम की रट क्यों नहीं भूलती ?

⇒ कवि को रामनाम की रट नही भूलती क्योंकि वो अपने आपको भगवान का दास समझते हैं ।

(4.) कवि की भक्ति में किस ~~भाव~~ भाव की प्रधानता है ?

⇒ कवि की भक्ति में भक्ति भाव की प्रधानता है ।

17|05|21

(2) कविता

CW

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै
जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै।
नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै॥
नामदेव :- महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध संत,
कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै।
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै

शब्दार्थ

लाल - स्वामी
कउन - कौन
गरीब निवाजु - दीन - दुखियों पर दया करने वाला
गुसईआ - स्वामी, गुसाईं
माथै छत्रु धरै - मस्तक पर मुकुट धारण करने वाला
छोति - छुआछूत, अस्पृश्यता
जगत कउ लागै - संसार के लोगों को लगती है।
ता पर तहीं ढरै - उन पर द्रवित होता है।
नीचहु ऊच करै - नीच को भी ऊँची पदवी प्रदान करता है।
नामदेव - महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध संत,
इन्होंने मराठी और हिंदि दोनों

तिलोचनु - एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य, ज्ञानदेव और नामदेव के गुरू थे।
संधना - एक उच्च कोटि के संत जो कबीर के समकालीन माने जाते हैं।
सेनु - ये भी एक प्रसिद्ध संत हैं, आदि गुरुग्रंथ साहब में संगृहीत पद के आधार पर इन्हें रामानंद का समकालीन माना जाता है।
हरिजीउ - हरि जी से
सभै सरै - सबकुछ संभव हो जाता है

व्याख्या → इस पद में कवि भगवान की महिमा का बखान कर रहे हैं। कवि कहते हैं कि हे! मेरे स्वामी तुम बिन मेरा कौन है अर्थात कवि अपने आराध्य को ही अपना सबकुछ मानते हैं। कवि भगवान की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं कि भगवान गरीबों और दीन-दुःखियों पर दया करने वाले हैं, उनके माथे पर सजा हुआ मुकुट उनकी शोभा को बढ़ा रहा है। कवि कहता है कि भगवान में इतनी शक्ति है कि वे कुछ भी कर सकते हैं और उनके बिना कुछ भी संभव नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि भगवान की इच्छा के बिना दुनिया में कोई भी कार्य संभव नहीं है।

१।५।२१

प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

प्रश्न 1 → पहले पद में भगवान और भक्त की जिन - जिन चीजों से तुलना की गई है ?

→ पहले पद में भगवान की तुलना चंदन से और भक्त की तुलना पानी से, भगवान की तुलना बादल से और भक्त की तुलना मोर से, भगवान की तुलना चाँद से और भक्त की तुलना चकोर से, भगवान की तुलना मोती से और भक्त की तुलना धागा से भगवान की तुलना दीपक से और भक्त की तुलना बाती से और भगवान की तुलना सोने से और भक्त की तुलना सुहागे से की गई है।

प्रश्न 2 → पहले पद की प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से नाद-सौंदर्य आ गया है, जैसे : पानी, समानी आदी। इस पद में अन्य तुकांत शब्द छाँटकर लिखिए।

→ इस पद में अन्य तुकांत शब्द मोरा-चकोरा, बाती - राती, धागा - सुहागा, दासा - रैदासा है।

रेणपोम

cw

अतिरिक्त प्रश्न उत्तर

प्रश्न -1 → जाकी अंग - अंग बास समानी

उत्तर → भाव यह है कि कवि रैदास अपने प्रभू से अनन्य भक्ति करते है। वे अपने आराध्य प्रभू से अपना संबंध विभिन्न रूपों मे जोडकर उनके प्रति अपनी भक्ति प्रकट करते हैं। रैदास अपने प्रभु को चंदन और खुद को पानी बताकर उनसे घनिष्ठ संबंध जोड़ते है। जिस तरह चंदन और पानी से बना लेप अपनी महक बिखेरता है उसी प्रकार प्रभू भक्ति और प्रभू कृपा के कारण रैदास का तन - मन सुगंध से भर उठा है जिसकी महक अंग - अंग को महसूस हो रही है।

प्रश्न -2→ जैसे चितवन चंद चकोरा।

उत्तर→ भाव यह है कि रैदास अपने आराध्य प्रभू से अनन्य भक्ति करते है वे अपने प्रभू के दर्शन पाकर प्रसन्न होते है। प्रभू - दर्शन से उनकी आँखे तृप्त नहीं होती है। वे कहते हैं कि जिस प्रकार

प्रश्न -3 → जाकी जोति बरै दिन राती।

→ भाव यह है कि अपने आराध्य प्रभु से अनन्य भक्ति एवं प्रेम करने वाला कवि अपने प्रभु को दीपक और खुद को उसकी बाती मानता है। जिस प्रकार दीपक और बाती प्रकाश फैलाते है उसी प्रकार कवि अपने मन में प्रभु भक्ति की ज्योति जलाए रखना चाहता है।

प्रश्न 4 → ऐसी लाल तुझ बिनु कउन करै।

उत्तर → प्रभु की दयालुता और गरीबों से विशेष प्रेम करने के विषय में कवि बताता है कि हमारे समाज में अस्पृश्यता के कारण जिन्हें कुछ लोग छूना भी पसंद नहीं करते हैं उन पर दयालु प्रभु असीम कृपा करता है। प्रभु जैसी कृपा उन पर कोई नहीं करता है। प्रभु कृपा से अछूत समझे जाने वाले लोग भी आदर के पात्र बन जाते है।

25/5/21

व्याकरण

शब्द

एक से अधिक वर्णों के मेल से बने सार्थक वर्ण-समूह शब्द कहलाते हैं।

जैसे - सोहन, खीर, मीरा, खेलता, बातें

दूसरे शब्दों में कहा जाता है कि -:

(1.) शब्द वर्णों के मेल से बनते हैं।

(2) शब्द सार्थक वर्ण-समूह या अक्षर-समूह होते हैं।

पद

पद की परिभाषा

जब कोई शब्द स्वतंत्र न रहकर व्याकरण के नियमों में बँध जाता है, तब वह शब्द 'पद' बन जाता है। इस प्रकार वाक्य में प्रयुक्त शब्द ही 'पद' है। कारक, वचन, लिंग, पुरुष इत्यादि में बँधकर शब्द 'पद' बन जाता है।

जैसे -> सीता गाती है।
ईश्वर रक्षा करे।

शब्द पद कब बनजाते है।

जब कोई सार्थक शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता है, तब उसे 'पद' कहते है। पर जब इसका प्रयोग वाक्य में होता है, तो इसका रूप भी बदल जाता है, इसलिए वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द को 'पद' कहा जाता है।

जैसे → राम आम खा रहा है।
इस में राम, आम, खा रहा है ये सभी पद है।

शब्द	पद
(1) शब्द वर्णों की स्वतंत्र एवं सार्थक इकाई है	पद वाक्य में प्रयुक्त शब्द है।
(2) शब्द का मात्र अर्थ परिचय होता है।	पद का व्याकरणिक परिचय होता है।
(3) शब्द सार्थक और निरर्थक दोनों होते है।	पद वाक्य में अर्थ का संकेत देता है।
(4) शब्द का लिंग, वचन, कारक क्रिया से कोई संबंध नहीं है।	पद का लिंग, वचन, कारक क्रिया का संबंध होता है।

3/06/21

दुःख का अधिकार

(क) प्रश्न उत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए -

1) किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें क्या ~~पता~~ पता चलता है ?

→ किसी व्यक्ति की पोशाक देखकर हमें उसका दर्जा तथा उसके अधिकारों का ज्ञान होता है।

2) खरबूजे बेचनेवाली स्त्री से कोई खरबूजे क्यों नहीं खरीद रहा था ?

→ खरबूजे बेचने वाली अपने पुत्र की मौत का एक दिन बीते बिना खरबूजे बेचने आई थी। सूतक वाले घर के खरबूजे खाने से लोगों का अपना धर्म भ्रष्ट होने का भय सता रहा था, इसलिए उससे कोई खरबूजे नहीं खरीद रहा था।

(3) उस स्त्री को देखकर लेखक को कैसा लगा ?

⇒ उस स्त्री को फुटपाथ पर रोता देखकर लेखक के मन में व्यथा उठी। वह उसके दुःख को जानने के लिए बेचैन हो उठा।

4) उस स्त्री के लड़के की मृत्यु का कारण क्या था?

⇒ उस स्त्री के लड़के की मृत्यु का कारण था- साँप द्वारा डँस लिया जाना। वह मुंह - अँधेरे खेत में खरबूजे तोड़ रहा था। उसी समय उसका पैर एक साँप पर पड़ गया था।

(5) बुढ़िया को कोई भी क्यों उधार नहीं देता

⇒ स्त्री का कमाऊ बेटा मर चुका था। अतः पैसे वापस न मिलने की आशंका के कारण कोई उसे इकन्नी - दुअन्नी भी उधार नहीं देता।

लिखित

क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30) शब्दों में लिखिए -

1) मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्व है ?

→ मनुष्य के जिवन मे पोशाक का बहुत महत्व है। पोशाक ही मनुष्य की सामाजिक और आर्थिक स्थिति दर्शाती है। पोशाक ही मनुष्य को मनुष्य में भेद करती है। पोशाक ही उसे आदर का पात्र बनाती है तथा नीचे झुकने से रोकती है।

2) पोशाक हमारे लिए कब बंधन और उदचन बन जाती है ?

→ जब हम अपने से कम हैसियत रखने वाले मनुष्य के साथ बात करते है तो हमारी पोशाक हमें ऐसा नहीं करने देती। हम स्वयं को बड़ा मान बैठते है और सामने वाले को छोटा मानकर उसके साथ बैठने तथा बात करने में संकोच अनुभव करते है।

(3) लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया ?

⇒ लेखक उस स्त्री के रोने का कारण इसलिए नहीं जान पाया क्योंकि रोती हुई स्त्री को देखकर लेखक के मन में एक व्यथा इसी पर अपनी अच्छी और उच्चकोटि की पोशाक के कारण फुटपाथ पर नहीं बैठ सकता था।

(4) भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था?

⇒ भगवाना शहर के पास ईंट बीघा जमीन पर हरी तरकारियाँ तथा खरबूजे उगाय करता था। वह रोज ही उन्हें सब्जी मंडी या फुटपाथ पर बैठकर बेचा करता था। इस प्रकार वह कड़िआरी करके अपने परिवार का निर्वाह करता था।

(5) लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बढ़िया खरबूजे बेचने क्यों चल पड़ी

Date
Page

⇒ लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूजे बेचने जाना बुढ़िया की घोर विवशता थी। साँप के डँसे लड़के की झाड़ - फूँक कराने, नाग देवता की पुजा और मृत्यु के बाद अंत्येष्टि करने में हुए खर्च के कारण उसके घर में अनाज का दाना भी न बचा था।

(6)

⇒ लेखक ने बुढ़िया के पुत्र शोक को देखा। उसने अनुभव किया कि इस बेचारी के पास रोने - धोने का भी समय और अधिकार नहीं है। तभी उसकी तुलना में उसे अपने पड़ोस संभ्रांत महिला की याद आ गई। वह महिला पुत्र शोक में दोई महीने तक पलंग पर पड़ी रहीं।

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60) शब्दों में लिखिए।

1) बाजार के लोग खरबूजे बेचनेवाली स्त्री के बारे में क्या - क्या कह रहे थे? अपने शब्दों में लिखिए।

=> बज़ार के लोग खरबूजे ~~बेचने~~ बेचनेवाली स्त्री के बारे में क्या / क्या कह रहे थे? अपने शब्दों में लिखिए।
तरह - तरह की बातें कहते हुए ताने दे रहे थे और धिक्कार रहे थे। उनमें से कोई कह रहा था कि बुढ़िया कितनी बेहया है जो अपने बेटे के मरने के ~~दिन~~ दिन ही खरबूजे बेचने चली आई। दूसरे सज्जन कह रहे थे कि जैसी नीयत होती है अल्लाह वैसी ही बरकत देता है। सामने फुटपाथ पर दियासलाई से कान खुजलाते हुए एक आदमी कह रहा था, " अरे इन लोगों का क्या है? ये कमीने लोग रोटी के टुकड़े पर जान देते हैं। इनके लिए बेटा - बेटी खसम - लुगाई, ईमान - धर्म सब रोटी का टुकड़ा है।

(2) पास - पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला?

=> पास पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को पता चला कि बुढ़िया का एक जवान पुत्र था - भगवाना। वह

तेईस साल का था। वह शहर के पास डेढ़ बीघे जमीन पर सब्जियाँ उगाकर बेचा करता था। एक दिन पहले सुबह-सवेरे वह पके हुए खरबूजे तोड़ रहा था कि उसका पैर एक साँप पर पड़ गया। साँप ने इसे डस लिया, जिससे उसकी मौत हो गई। उसके मरने के बाद घर का गुजारा करने वाला कोई नहीं था।

(3) लड़के को बचाने के लिए माँ ने क्या-क्या उपाय किए?

⇒ लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया ने वह सब उपाय किए जो उसकी सामर्थ्य में थे। साँप का विष उतारने के लिए झाड़ फूँक करने वाले ओझा को बुला लाई ओझा ने झाड़ फूंक की नाग देवता की पूजा की गई और घर का आटा और अनाज दान-दक्षिणा के रूप में दे दिया गया। उसने अपने बेटे के पैर पकड़कर विलाप किया, पर विष के प्रभाव से शरीर काला पड़ गया और वह मृत्यु को प्राप्त कर गया।

CW
8/05/21

4) लेखक ने बुढ़िया के दुख का अंदाजा कैसे लगाया?

⇒ लेखक ने बुढ़िया के दुःख का अंदाजा लगाने के लिए अपने पड़ोस में रहने वाली एक संभ्रांत महिला को याद किया। उस महिला का पुत्र पिछले वर्ष चल बसा था। तब वह महिला ढाई मास तक पलंग पर पड़ी रही थी। उसे अपने पुत्र की याद में मूर्छा आ जाती थी। वह हर पंद्रह मिनट बाद मूर्छित हो जाती थी। दो-दो डॉक्टर हमेशा उसके सिरहाने बैठे रहा करते थे। उसके माथे पर हमेशा बर्फ की पट्टी रखी रहती थी। पुत्र शोक मनाने के सिवाय उसे कोई दोष-हवास नहीं था, न ही कोई जिम्मेवारी थी। उस महिला के दुःख की तुलना करते हुए उसे अंदाजा हुआ कि इस गरीब बुढ़िया का दुःख भी कितना बड़ा होगा।

(5) इस पाठ का वार्षिक 'दुख का अधिकार' कहानी को पढ़कर ऐसा लगता है कहाँ तक सार्थक है? स्पष्ट कीजिए।

⇒ दुख का अधिकार कहानी को पढ़कर

ऐसा लगता है कि संभ्रांत व्यक्तियों को दुख ज्यादा भारी होता है। उन्हें दुख व्यक्त करने का अधिकार है। उनके दुख को देखकर आस पास के लोग भी दुखी ही नहीं होते हैं, बल्कि उनके प्रति सहानुभूति दर्शाते हैं। ठीक उसी प्रकार के दुख से जब कोई गरीब दुखी होता है तो लोग उसका उपहास ही नहीं उड़ाते हैं बल्कि उससे घृणा भी प्रकट करते हैं। वे तरह की बातें बनाकर उस पर कटाक्ष करते हैं, मानो गरीब को दुख मनाने का कोई अधिकार ही नहीं है। इस पाठ की पूरी कहानी इसी दुख के आसपास घूमती है अतः यह शीर्षक पूर्णतया सार्थक है।

निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

1) जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं। उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है।

→ लेखक कहना चाहता है कि हमारी पोशाक और हमारी हैसियत हमें नीचे गिरने और झुकने से रोकती है। जिस प्रकार हवा की लहरें पतंग को एकदम सीधे नीचे नहीं गिरने देतीं, बल्कि धीरे-धीरे गिरने की इजाजत देती है, ठीक उसी प्रकार हमारी पोशाक हमें अपने से नीची हैसियत वालों से एकदम मिलने-जुलने नहीं देती। हमें उनसे मिलने में संकोच होता है।

(2) इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।

→ आशय यह है कि भूखा आदमी कौन-सा पाप नहीं करता है अर्थात् वह हर पाप करने को तैयार रहता है। जिस विवश और लाचार व्यक्ति के पास घर में खाने के लिए एक दाना भी नहीं, वह अपने सारे कर्म रोटी के इंतजाम के लिए करेगा। रोटी पा लेना ही उसकी प्राथमिकता होगी। इस प्राथमिकता के लिए वह हर तरह के कर्म करने को तैयार रहता है।

3) शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और दुखी होने का भी एक अधिकार होता है।

* लेखक संभ्रांत महिला और गरीब बुढ़िया - दोनों के दुख सुनाने के ढंग को देखकर सोचता है - दुःख प्रकट करने के लिए और मृत्यु का शोक प्रकट करने के लिए भी मनुष्य को सुविधा होनी चाहिए। उसके पास इतना धन, साधन और समय होना चाहिए कि दुःख के दिनों में उसका काम चल जाए। डॉक्टर उसकी सेवा कर सकें। उस पर घर के बच्चों के भरण-पोषण की जिम्मेदारी न हो। आशय यह है कि गरीब लोग मजबूरी के कारण ठीक से शोक भी नहीं मना पाते। उनकी मजबूरियाँ उन्हें परिश्राम करने के लिए बाध्य कर देती हैं।

गिल्लू

प्रश्न उत्तर

1) सोनजुही में लगी पीली कली को देख, लेखिका के मन में कौन से विचार उमड़ने लगे?

उ) सोनजुही में लगी पीली कली को देख, लेखिका के मन में यह विचार उमड़ने लगा की जब गिल्लू की मौत हुई तब उसकी समाधि सोनजुही के नीचे रखा था। जब भी सोनजुही में पीली कली देखते ही वो सोचती है की गिल्लू फूल के रूप में शरारत करने के लिए आया।

2) पाठ के आधार पर कौए को एक साथ समादृत और अनादृत प्राणी क्यों कहा गया है?

उ) जब पितरपक्ष के समय जब हमारे गुजरने वाला कौए के रूप में आकर हमारे दिए गए खाना ग्रहण करके हमसे आदर पाता है। और जब वो बेवजह बिना के काँऊ - काँऊ करता है तो हम उसे अनादर करते है।

3) गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार किस प्रकार किया गया?

=> गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार किया, पहले उसने रुई से खून पोंछ कर घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया फिर रुई की पतली बत्ती दूध से भिगोकर जैसे उसके नन्हे से मुँह में लगाई पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदें दोनों ओर ढुलक गई। कुछ घंटे के उपचार के उपरांत उसके मुँह में पानी टपकाया गया। उसके बाद वो ठीक हो गया। इस प्रकार उसका उपचार किया गया।

4) लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था?

=> लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू ने एक उपाय खोजा। वह लेखिका के पैर तक आकर सर से पर्दे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेजी से उतरता। वह यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता जब तक लेखिका उसे पकड़ती नहीं।

5) मिल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता क्यों समझी गई और उसके लिए लेखिका ने क्या उपाय किया?

⇒ लेखिका के घर में रहते हुए मिल्लू के जिवन का प्रथम वसंत आया। नीम - चमेली की खुशबू लेखिका के कमरे में धीरे - धीरे फैलने लगी। लेखिका कहती है कि बाहर की गिलहरियाँ उसके खिड़की की जाली के पास आकर चिक - चिक करके न जाने क्या कहने लगी? जिसके कारण मिल्लू खिड़की से बाहर झाँकने लगा। मिल्लू को जाली के पास बैठकर अपने में इस तरह बाहर झाँकते देखकर लेखिका को लगा कि इसे आजाद करना अब जरूरी है। लेखिका ने खिड़की पर लगी लगी जाली की कीलें निकाली।

6) मिल्लू किन अर्थों में परिचारिका की भूमिका निभा रहा था?

⇒ जब लेखिका अस्पताल से घर आई तो मिल्लू उसके सिर के पास बैठा रहता था, खुद अपने नन्हे पंजों से लेखिका के सिर और बाल को सहलाता रहता था। इस तरह से वह किसी परिचारिका की भूमिका निभा रहा था।

7) गिल्लू कि किन चेष्टाओं से यह आभास मिलने लगा था कि अब उसका अंत समय समीप है ?

→ गिल्लू ने दिन भर कुछ नहीं खाया था। वह कहीं बाहर भी नहीं गया था। रात में वह बहुत तकलीफ में लग रहा था। उसके बावजूद वह अपने झूले से उतरकर लेखिका के पास आ गया। गिल्लू ने अपने ठंडे पंजों से लेखिका कि अंगुली पकड़ ली और उनके हाथ से चिपक गया। इससे लेखिका को लगने लगा कि गिल्लू का अंत समय समीप ही था।

8) प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया'- का आशय स्पष्ट कीजिए।

→ प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया'- इस पंक्ति में लेखिका ने पुनर्जन्म की मान्यता को स्वीकार किया है। लेखिका को लगता है कि गिल्लू अपने अगले जन्म में किसी अन्य

प्राणी के रूप में जन्म लेगा।

Q) सोनजूही की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि से लेखिका के मन में किस विश्वास का जन्म होता है?

A) लेखिका ने गिल्लू को उस जूही के पौधे के नीचे दफनाया था क्योंकि गिल्लू को वह लता सबसे अधिक प्रिय थी। लेखिका ने ऐसा इसलिए भी किया था क्योंकि लेखिका को उस छोटे से जीव का, किसी वसंत में जूही के पीले रंग के छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास, लेखिका को एक अलग तरह का संतोष देता था।

INDEX

Name Sanjana Dash Sub. Hindi copy

Std. IX Div. A Roll No.

Sl. No.	Topic	Page No.	Date	Grade/ Marks	Sign.
1	पद वेदास		12/04/21		
2	Q/Ans		20/04/21		
3	दुःख का अधिकार		28/04/21		
4	Q/Ans		3/05/21		
5	गिल्लू		10/05/21		
6	Q/Ans		11/05/21		